संगीत और धर्म

डॉ॰ अनीता शर्मा

सहायक प्रवक्ता, संगीत गायन, एस॰एन॰आर॰ जयराम गर्ल्स कॉलेज, लोहार माजरा, कुरुक्षेत्र

शोध सार

संगीत को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग माना गया है । इसकी साधना से हम ईश्वर की प्राप्ति कर सकते हैं। संगीत को आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का साधन मानकर भी इसकी साधना की जाती है। संगीत और धर्म दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ईश्वर संबंधी कोई भी बात गणनात्मक तथा तार्किक रूप से नहीं की जा सकती क्योंकि यह केवल मनःस्थिति संवेदना एवं आस्था का विषय है। इसलिए संगीत को ईश्वर की आराधना एवं मन को एकाग्र करने का सशक्त माध्यम माना जाता है। धर्म का लक्ष्य मनुष्य को सत्य का मार्ग दिखाकर उसकी आध्यात्मिक और सांसारिक उन्नति ही करना है। जीवन का कोई पहलू ऐसा नहीं है जहाँ धर्म की धारणा न हो । धर्म एक सामाजिक विचार है जो मानवीय व्यवहार, नैतिकता, परस्पर सद्भाव ईश्वरीय मान्यता इत्यादि सभी बातों का आदर्श प्रस्थापित करके मानव द्वारा धारण किया जाता है। भजन और कीर्तन जो भी परमात्मा की आराधना की जाती है वे सभी गेय रूप में उसके मन को एकाग्र करके मोक्ष प्राप्ति का साधन ही बनते हैं । अतः संगीत ओर धर्म का अटूट सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । धर्म में संगीत भगवान का मनुष्य के लिए अद्वितीय आशीर्वाद है अतः किसी भी संस्कृति का संरक्षण एवं विकास संगीत और धर्म दोनों में ही विद्यमान है ।

विषय सूचक शब्द : संगीत, धर्म, साध्य एवं साधक, संस्कृति, ऋचाएं, मनःस्थिति, संवेदना, आध्यात्मिक, अभिभूत ।

भूमिका :

संगीत की महिमा अनन्त है। जिसे संगीत का वरदान प्राप्त है वह इसकी महिमा से अभिभूत रहा है। संगीत विभिन्न धर्मों के भक्ति मार्गों को अंतिम लक्ष्य की ओर जाने में सहायक है। संगीत द्वारा साध्य और साधक दोनों ही परम सुख प्राप्त करते है जहां एक ओर भारतीय परम्परा में परमानन्द की प्राप्ति है। संगीत का प्रयोग दार्शनिकों, योगियों और भक्तों ने किया है वहीं दूसरी ओर जनसाधारण ने भी उसको अपने धार्मिक तथा सामाजिक उत्सवों तथा व्यक्तिगत मनोरंजन का साधन बनाया। संगीत को हृदय की विषय वस्तु मानते हुए श्री रिगे जी लिखते है कि "संगीत मानव मात्र की आत्मा का ऐसा भोजन है जिसके अभाव में मानवाचित गुण फल–फूल नहीं सकते। जिसे मानवता के विकास की उत्कृष्ट इच्छा है उसे भी कोई महात्मा अथवा योगी चित की स्थिरता के लिए संगीत का ही आश्रय लेने का परामर्श देता है। संगीत का ज्ञान परमावश्यक है। संगीत भारतीय संस्कृति का दर्पण है। भारतीय संगीत कला के अंग–प्रत्यंग से आध्यात्मिक की अमिट छाप स्पष्ट रूप से अंकित होती है।

उद्देश्य :

संगीत कला का प्रधान लक्ष्य और उद्देश्य है– आत्मसन्तोष अथवा आत्म–तृप्ति। संगीत में स्वर, लय मन को एकाग्र करके इतना अधिक तन्मय एवं तल्लीन तथा स्थिर कर देते है कि हृदय की अन्य समस्त चंचल वृतियां तिरोभूत होकर अन्तर्मुखी हो जाती है। अतः चंचल चितवृत्ति के निरोध साध्य के साथ एकीकरण और भक्ति में तन्मयता लाने के लिए संगीत को अपनाना अनिवार्य है। संगीत आत्मा की सात्विक खुराक है। मानव जीवन के मानसिक तथा सांस्कृतिक विकास में संगीत सफल तथा सशक्त भूमिका निभाता है। संगीत कला मानव के धार्मिक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं कलात्मक पक्षों की संजीव अनुभूति कराने में सक्षम है। इतिहास में संगीत को कही तो ईश्वर प्राप्ति का मार्ग माना गया है तो कहीं उसे साक्षात् ईश्वर का पर्याय। इसी कारण संगीत को आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का साधन मानकर उसकी भी उपासना की गई है। ईश्वर संबंधी कोई भी बात अथवा चर्चा गणनात्मक तथा तार्किक रूप से नहीं की जा सकती, क्योंकि यह केवल मनःस्थिति, संवेदना एवं आस्था का विषय

हैं इसी कारण संगीत को ईश्वर की आराधना एवं मन को एकाग्र करने का सर्वाधिक सशक्त माध्यम माना जाता है। भारतीय परम्परा में धर्म का लक्ष्य मनुष्य को सत्य मार्ग दिखाकर उसकी आध्यात्मिक और सांसारिक उन्नति ही करना है। मूल रूप से धर्म का मुख्य उद्देश्य मनुष्य का कल्याण करना ही रहा है। जीवन का कोई पहलू ऐसा नहीं है जहां धर्म की धारणा न हो। धर्म की रक्षा करना हो। मनुष्य का परम कर्त्तव्य माना जाता है । धर्म के सहारे ही प्रत्येक पदार्थ की सत्ता स्थिर रहती है। संगीत का आरम्भ धार्मिक भावनाओं के स्फुरण एवं उनकी अभिव्यक्ति से ही हुआ है। विश्व की सभी प्राचीन संस्कृतियों में धर्म और संगीत का गहरा सम्बन्ध रहा है। धर्म एक सामाजिक विचार है, जो मानवीय व्यवहार, नैतिकता, परस्पर सद्भाव, ईश्वरीय मान्यता इत्यादि सभी बातों का आदर्श प्रस्थापित करके मानव द्वारा धारण किया जाता है। धर्म का अर्थ, एक विश्वास, एक भावना और संकल्प की व्यवहारिक क्रिया है। धर्म की परिभाषा करने पर हमारे मस्तिष्क में मन्दिर–मस्जिद, प्रार्थनाएं, प्रवचन, शब्द, कीर्तन व जप–तप आदि विषयों का भाव उत्पन्न होता है। किन्तु ये सब तत्व धर्म नहीं है ये केवल एक मार्ग है और ये मार्ग ही उसे मोक्ष की ओर ले जाते है।

भजन और कीर्तन जो भी परमात्मा की आराधना के लिए किए जाते है। वे सब गेय रूप में ही है। लगभग सभी देवताओं के लिए गीतों की रचना हुई। इसके अतिरिक्त कुछ देवी देवताओं के गीत अपना अलग स्थान और महत्त्व बनाए हुए है। इन आरतियों की एक विशेष शैली प्रचलित है। संगीत और धर्म आधुनिक युग में दो पृथक परम्पराएँ भले ही बन गई है, लेकिन संगीत को धर्म से अलग करना असम्भव ही जान पड़ता है। धर्म ऐसी ही वस्तु है जिसको केवल अनुभव किया जाना चाहिए। भारत में अनेक धर्म है लेकिन सभी धर्मों का अपना अलग संगीत नहीं होता उनकी अपनी अलग–अलग शैलियां जरूर होती है। जैसे– यज्ञ गान, कीर्तन तथा पदगान आदि ।

भारतीय संगीत का उद्भव सामवेद की ऋचाओं से हुआ है। नाद परावाक् का पर्याय ब्रह्म भी शक्ति है। नाद की उपासना करने वाले को भी नाद और ब्रह्म की अत्यधिक निकटता के कारण ब्रह्म की प्राप्ति सहज ही हो जाती है। मतंग आदि मुनियों ने भगवान शंकर की आराधना के लिए वेणु से सुषिर वाद्यों का निर्माण किया तथा उसका नाम सम्प्रदाय विशेष का बोध कराने के लिए "वंश" रखा। पं॰ ओंकार नाथ ठाकुर ने नाद को ब्रह्म का सगुण रूप कहा है। ब्रह्म की अनुभूति प्रणव की साधना से तथा नाद की उपासना से ही सिद्ध होती है। हिन्दू धर्म में तो संगीत को भगवान् का मनुष्य के लिए अद्वितीय आशीर्वाद समझा जाता है। हिन्दू धर्म में संगीत को धर्म, कर्म, अर्थ और मोक्ष सभी प्रकार के सुख देने वाला बताया है। नाद को "ब्रह्मानन्द सहोदर" माना जाता है। हिन्दू धर्म में मनुष्य के जन्म से लेकर मरण तक के सोलह संस्कारों में संगीत उसकी छाया के समान उसके साथ ही रहता है। प्रातः से लेकर सायं तक मन्दिरों और घरों में संगीत गुंजता रहता है। संगीत के धार्मिक और आध्यात्मिक रूप के साथ–साथ श्रृंगारिक और मनोरंजनात्मक संगीत का भी समाज में प्रमुख स्थान है। इस्लाम धर्म के लोग भी संगीत को काफी चाहते है। ये अपने अल्लाह खुदा का गुणगान नृत्य एवं संगीत के माध्यम से करते है। सूफी लोग अपने इष्ट को अपनी प्रेमिका व प्रेमी के रूप में उसका गुणगान संगीत के माध्यम से करते है। इस्लाम धर्म की मजारों व मस्जिदों में संगीत गुंजायमान रहता है। सिख धर्म में गुरु ग्रन्थ साहिब के जितने भी पद है वे सभी रागों और तालों में बद्ध है। पूरे गुरु ग्रन्थ साहिब को समस्त पदों को संगीत के माध्यम से गाकर ही उस परमात्मा तक पहुंचने की प्रयास रहता है। ईसाई धर्म का भी संगीत एक मुख्य अंग है। गिरिजाघरों में सामूहिक गान की ध्वनि हमेशा ही गुंजती रहती है। संक्षेप में संगीत और धर्म एक ही सिक्के दो पहलू है।

विश्लेषण :

धर्म से सम्बन्धित होना ही संगीत की वह शक्ति है, जिसके आधार पर संगीत विश्व की संस्कृति की एक अभिन्न एवं महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। धर्म और संगीत दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए है। दोनों का अस्तित्व एक दूसरे के बिना नहीं है। संगीत के माध्यम से ही साधक अपने स्वरों के द्वारा अपने मन को उस परमात्मा में विलिन कर देता है और बड़े–बड़े योगी लोग इन्हीं स्वरों की साधना से ही उस परमात्मा तक पहुँच जाते है। संगीत और धर्म दोनों एक दूसरे से भिन्न नहीं है।

निष्कर्ष :

अतः संगीत और धर्म का अटूट सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए है। धर्म में संगीत भगवान का मनुष्य के लिए अद्वितीय आशीर्वाद है। योगशिखों उपनिषद के अनुसार नाद से बड़ी कोई पूजा नहीं मानी गई हैं । देवताओं से हमारे संगीत को जोड़ने का प्रयोजन संगीत में श्रृंगार रस के बाहुल्य एवं अश्लीलता का निराकरण करना है। इसी प्रयोजन को ध्यान में रखकर हमारे विद्वानों ने संगीत कला को धर्म से सम्बन्धित किया है क्योंकि धर्म ही वह तत्व है जो मानव मात्र को अनुचित और उचित का ज्ञान कराकर समाज और संस्कृत की परम्पराओं को निरन्तर विकसित करने के साथ–साथ पतन से बचाता है। अतः यहाँ पर किसी भी संस्कृति का संरक्षण एवं विकास संगीत और धर्म दोनों में ही विद्यमान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. व्यास, डॉ॰ रामनारायण, धर्म दर्शन
2. सचदेव, डॉ॰ रेनु, धार्मिक परम्पराएँ एवं हिन्दुस्तानी संगीत
3. शर्मा, डॉ॰ सुनीता, भारतीय संगीत का इतिहास, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक
4. पण्डित अहोबल, संगीत पारिजात भाष्यकार कलिन्द
5. उपाध्याय, आचार्य बलदेव, भारतीय धर्म और दर्शन, चौखम्बा आरिएण्टल, वाराणसी, सन् 1977
6. यमन, अशोक कुमार, संगीत रत्नावली, अभिषेक पब्लिकेशन
7. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, संगीत निबन्ध–संगीत कार्यालय, हाथरस
8. शर्मा, भगवतशरण, भारतीय संगीत का इतिहास
9. गर्ग, लक्ष्मीनारायण, संगीत–सम्पादक, 2004
10. शास्त्री, के॰ वासुदेव, संगीत शास्त्र, हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश